प्राचीन इतिहास के स्त्रोत

- हरियाणा का प्राचीन इतिहास बहुत ही गौरवशाली है | उस युग में हरियाणावासियों ने जो राष्ट्र और राष्ट्रीय जीवन को दिया, वह अद्वतीय है | अपने इस गौरवशाली इतिहास के साक्ष्यों को हम निम्नोक्त तीन प्रकार के स्त्रोतों से प्राप्त कर सकते है : (1)पुरातात्विक स्त्रोत (2)सहित्यिक स्त्रोत,और (3)आधुनिक स्त्रोत |
- हरियाणा में पुरातात्विक महत्त्व के हजारों स्थान (टीलें,थेह,उजड़े खेड़े, आदि कदम-कदम पर बिखरे पड़े है | इनका पता पुरातात्विक द्वारा सतही-सर्वेक्षणों द्वारा लगाया गया है |
- स्वतंत्रता के बाद इनमें से कई स्थलों का उत्खखनन भी हो चुका है | इन उत्खनित स्थलों में सुघ,मिताथल,सीसवाल,मसूदपुर,कुरुक्षेत्र, दौलतपुर, कर्ण का किला, जोगना खेड़ा,मिर्जापुर,बालु,मानहेडू, नौरंगाबाद, बनवली, रखिगढ़ी, अग्रोहा, कसरोला, मसूदपुर,कुणाल, खोखाकोट,भिरड़ाना,फरमाण,सिमन,गिरावड़,मदीना, भगवानपुर,लोहार,बदली, आदि मुख्य है |
- पुरातत्ववेत्ताओं को यहां से अति मूल्यवान सामग्री उपलब्ध हुई है जिससे न केवल ऐतिहासिक काल का ही वरन् प्रागैतिहासिक काल का इतिहास भी लिखा जा सकता है |
- इस मूल्यवान पुरातात्विक महत्त्व की सामग्री को हम सुविधा के लिए पांच वर्गों में बांट सकते है (1)अभिलेख,(2)सिक्के,(3)मुद्रांक,(4)मूर्तियां तथा,(5)स्मारक आदि |

अभिलेख

- इतिहास निर्माण के साधनों में अभिलखों का बहुत ही महत्त्वपूर्ण स्थान है | इनसे हमें मालिकों,प्रेषकों के इतिहास का तो पता चलता ही है, उसके साथ-2 बहुत सी अन्य जानकारियां भी प्राप्त होती है,जैसे तत्कालीन भाषा, धर्म, आर्थिक अवस्था, आदि |
- ये अभिलेख पत्थर की शिलाओं,ताम्रपत्रों तथा लाटों आदि पर खुदे हुए रहते है | ये मुख्यतः पांच प्रकार के है |

1) धार्मिक अभिलेख, जिनमें बहुधार्मिक विषयों की चर्चा है |
2) प्रशंसात्मक अभिलेख,जिनमें राजवंशवलियों, प्रशासकीय प्रबंध की जानकारी है |
3) स्मारक लेख,जो किन्ही विशेष घटनाओं की स्मरण रखने के लिए खुदवाए गए है |
4) आज्ञापत्र,जिन पर शासकों की विशेष आज्ञाएं अंकित है, और
5) दानपत्र जोकि शासकों अथवा अन्य व्यक्तियों द्वारा दिए गए दान के प्रमाणपत्र है |

- हरियाणा से प्राप्त अभिलखों से सबसे प्राचीन तोपड़ा(अम्बाला के निकट)स्तंभ अभिलेख है | यह स्तंभ सम्राट अशोक के समय का है और इस पर सम्राट अशोक(273ई.पू.-232 ई.पू.) के सात अभिलेख अंकित है |
- ये सब के सब अभिलेख नैतिक शिक्षा प्रदान करते है | इसकी लिपि ब्राहमी और भाषा प्राकृत है |
- दूसरा प्राचीन अभिलेख सुघ(यमुनानगर) से मिला है | यहां मिट्टी की एक छोटी सी मूर्ति में एक बच्चा तख्ती पर स्वर एवं व्यंजन अक्षरों का लेखन करता हुआ दिखाई देता है | दूसरी शती ईसा पूर्व का यह अभिलेख समस्त भारत में बारहखड़ी की लिखाई का सबसे पुराना अभिलेख है |
- तीसरी-चौथी शतियों के संधिकाल के तोशाम से दो अभिलेख प्राप्त हुए है | ये किन्हीं तालाब आदि से संबंधित है |
- इसी समय के हिसार के गुजारी महल स्तंभ पर आठ अभिलेख है | ये भागवतों के यहां आने की सूचना देते है |
- कनिंघम ने पिंजौर से काफी पुराने तीन अभिलेख प्राप्त किए थे, इनसे पता चलता है कि पहले इस नगर को पंचपुर कहते थे | इससे थोड़े बाद का, अर्थात् यौधेय युग का एक अभिलेख अग्रोहा से प्राप्त एक मुद्रांक पर अंकित है इससे यौधेय गण की प्रशासनिक व्यवस्था पर प्रकाश पड़ता है |
- हर्ष का (सातवीं शती) सोनीपत से प्राप्त ताम्र मुद्रांक इससे भी अधिक महत्त्व का है | इससे हमें पुष्पभूति-नरेश हर्षवर्धन के वंश-वृक्ष का ज्ञान होता है |
- नौवीं शती का पेहवा से प्राप्त भोजदेव का एक अभिलेख हरियाणा के सांस्कृतिक इतिहास पर काफी रौशनी डालता है |

- एक अन्य प्रतिहार राजा महेन्द्रपाल का कल की एक अग्रोहा से प्राप्त 'टैब्लेट' संगीत के इतिहास में विशेष स्थान रखती है इस पर नी,धा,पा,मा,गा,रे,सा आदि अंकित है | यह संभवतः संगीत के इतिहास से संबंधित सबसे पुरानी पुरातात्विक सामग्री है |
- मोहनबाड़ी(रोहतक),गुरावड़ा(रेवाड़ी),हांसी,पालम(बाव ली),आदि बहुत-से स्थानों से भी अभिलेख मिले है जिनमें बड़ी मूल्यवान जानकारी है | ये अभिलेख हरियाणा के इतिहास को जानने के लिए अति महत्त्वपूर्ण स्त्रोत है |

सिक्के

- अभिलेखों की तरह सिक्के भी बेहद काम की चीज है | हरियाणा के भिन्न-2 स्थानों से हमें अनगिनत सिक्के प्राप्त हुए है | वस्तुतः 300ई.पू.से 300ई. तक का इस प्रदेश का इतिहास तो काफी हद तक इन सिक्कों के आधार पर टिका है |
- अन्य युगों के इतिहास लेखन में भी सिक्कों का विशेष योगदान है राजवंशावलियोंके निर्माण में,राज्यों तथा गणराज्यों की सीमाओं के निर्धारण में,तथा तत्कालीन धर्म,विश्वास,व्यवस्था,आर्थिक दशा,कला आदि के विषय में इनसे बहुत सारी जानकारी प्राप्त होती है |
- हरियाणा में विभिन्न स्थानों से मिले सिक्कों को हम पांच श्रेणियों में बांट सकते है : प्रथम आहत मुद्राएं(पंचमाक्रर्ड क्वाईस) जो कि खोखराकोट,सुघ,नौरंगाबाद.अग्रोहा आदि स्थानों से उपलब्ध हुई है |
- ये प्राचीनतम है | इनका काल दूसरी शताब्दी तक के है | दुसरे, विदेशियों के सिक्के है जो कि शताब्दी ईसा पूर्व से तीसरी शताब्दी तक के है |
- इनमें इंडो-ग्रीक शासकों के सिक्के है | ये खोकराकोट,नौरंगाबाद,अग्रोहा और सुघ से मिले है
- कुषाण शासकों के सिक्के झज्जर,हिसार,हांसी,खोखराकोट,रेवाड़ी आदि अनेक स्थानों से प्राप्त हुए है |
- खोखराकोट और नौरंगाबाद से हुविष्क और कनिष्क,इंडोग्रीक तथा चन्द्रगुप्त दि्वतीय की मुद्रा बनाने के सांचे भी मिले है |
- तीसरे,गणराज्यों के सिक्के है जो कि दूसरी शताब्दी ईसा पूर्व से चौथी शताब्दी तक के हैं |इनमें अग्र जनपद के बहुत सारे सिक्के अग्रोहा,बरवाला और नौरंगाबाद से प्राप्त हुए है |
- यौधेय गण के सिक्के तो लगभग हर पुरानी थेह से मिलते है | कुणिंदों के बहुत से सिक्के करनाल,जगाधरी,बूड़िया,सुघ आदि से मिले है,चौथे गुप्त सम्राटों के सिक्के है |
- विशेषत: समुद्रगुप्त के सिक्के मिताथल(भिवानी) और अग्रोहा से प्राप्त हुए हैं पांचवें,प्रतिहार,तोमर,चौहान आदि शासकों के है | इनके प्राप्ति स्थान खोकराकोट,सुघ,बूड़िया,हांसी,तलाव(झज्जर),ककराला (कनीना),मोहनबाड़ी,आदि है |
- ये इतिहास-निर्माण के लिए,जैसा कि ऊपर ख आए है ,काफी काम की चीज है | एन मुद्राओं से हरियाणा के इतिहास के कई स्थल उजागर होते है

मुद्रांक

- मुद्राओं की तरह ही मुद्रांको का भी इतिहास के साधन के रूप में काफी महत्त्व है | इनसे लगभग सभी पक्षों पर प्रकाश पड़ता है |
- हरियाणा में अग्रोहा,नौरंगाबाद,खोखकराकोट(रोहतक),सुघ,दौलतपु र(कुरुक्षेत्र),राजा कर्ण का किला(कुरूक्षेत्र),थेह-पोलर आदि स्थानों से बहुत सारे मुद्रांक प्राप्त हुए है |
- इनमें से अधिकांश मुद्रांक गुरुकुल झज्जर के संग्रहालय में रखे है | इनके अतिरिक्त देश के अन्य भागों में स्थिति सग्रहालयों में भी हरियाणा से मिली काफी बड़ी संख्या में मुद्रांक रखे हुए है |

मूर्तियां

- मूर्तियां भी इतिहास निर्माण में काफी योगदान देती है इनसे तत्कालीन समाज के स्तर,कला का जीवन में स्थान,धर्म,आर्थिक दशा आदि का परिज्ञान होता है |
- हरियाणा में प्राप्त मूर्तियां धार्मिक संप्रदायों-शैव,वैष्णव,बौद्ध,जैन आदि से संबद्ध है | ये ज्यादातर पत्थर की है |
- कुछधर्मेतर विषयों पर भी बनी हुई मूर्तियां यहां से प्राप्त हुई है | ये कुछ अष्टधातु की तथा ज्यादातर मिट्टी की है | इन मूर्तियों का समय दूसरी शताब्दी ईस्वी पूर्व से दसवीं-ग्यारहवीं तक का है |
- ये मुख्यतः निम्न चार श्रेणियों में विभाजित की जा सकती है: प्रथम,शंगुकालीन मूर्तियां हैं | इन

मूर्तियों का प्रधान केंद्र सुघ के आस पास था दुसरे,कुषाणकालीन मूर्तियां हैं ये मूर्तियां कुषाणों के आगमन के पश्चात् बनी और इनका प्रधान केंद्र रोहतक के आसपास का क्षेत्र है तीसरे,बौद्ध एवं जैन मूर्तियां हैं |

- ये बाद की मूर्तियां है और इनका निर्माण मोहनबाड़ी आदि अनेक जगह होता था | चौथे,पूर्व मध्यकाल की मूर्तियां है | ये उत्तरी हरियाणा तथा सत्कुम्भा(सोनीपत),आदि से प्राप्त हुई है और अधिकांशत: प्रतिहार,तोमर युग की है |

स्मारक,आदि

- स्मारक से हमारा तात्पर्य है,समाधि,भवन,दुर्ग,मन्दिर आदि,जिन्हें आसानी से स्थानांतरित नहीं किया जा सकता | दुर्भाग्यवश हरियाणा में प्राचीन भवन,मन्दिर,विहार,स्तूप,दुर्ग आदि का अधिकतर विनाश हो गया है अत: वे नहीं मिलते है | हाँ उनके कुछ अवशेष जरुर मिलते है |
- उदाहरणार्थ,कुरुक्षेत्र(थानेसर) में ही महत्वपूर्ण भवनों तथा दुर्गा के अवशेष पड़ें है | इनमें एक तो सम्राट हर्षवर्धन का महल तथा किला थानेसर में है,और दूसरा वहां से पांच-छ: किलोमीटर की दुरी पर राजा कर्ण का किला है |
- हांसी का किला भी,जो खंडहर रूप में है,प्राचीन काल का है | इसीप्रकार कुछ खंडहर प्राचीन मंदिरों के भी है |
- ये मंदिर 8वीं से 12वीं शती तक के है,जो रोहतक,पिंजौर,कलायत आदि जगहों पर थे | मौर्यकालीन स्तूप चनेटी और अग्रोहा में थे,ऐसा पता चलता है |
- अशोक की लाट तोपड़ा,हिसार और फतेहाबाद में थीं | कलायत के दो मन्दिर किसी तरह बच गये थे | वे सुरक्षित है | इन अवशेषों से हम उस काल की वास्तुकला तथा धार्मिक,सांस्कृतिक और आर्थिक इतिहास का कुछ ज्ञान प्राप्त कर सकते है |

साहित्यिक सामग्री

- इतिहास का निर्माण में जो स्थान साहित्यिक ग्रंथों का है वह अन्य किसी भी साधन का नहीं हो सकता | किन्तु अति प्राचीन काल के इतिहास के लेखन में हमें इस दिशा में कोई विशेष सहायता नहीं मिलती-उस काल की साहित्यिक सामग्री का अभाव सा है |
- हाँ,वैदिक काल से साहित्यिक सामग्री मिलनी प्रारंभ हो जाती है,जिनकों मोटे रूप से पांच श्रेणियों में रख सकते है :
  - I. वैदिक साहित्य
  - II. जैन साहित्य
  - III. बौद्ध साहित्य
  - IV. संस्कृत साहित्य
  - V. विदेशियों के वितरण
- लगभग सभी इतिहासकार इस बात से सहमत है कि अधिकांश वैदिक साहित्य,वेद,ब्राहमण,उपनिषदू,आरण्यक आदि की रचना हरियाणा प्रदेश में हुई थी |
- अत: उक्त ग्रंथों से इस क्षेत्र के धार्मिक,सामाजिक,सांस्कृतिक,आर्थिक तथा राजनीतिक जीवन में संबंध में पर्याप्त जानकारी मिलना एक स्वाभाविक बात है |,उदाहरणार्थ,ऋग्वेद में,जो विश्व का सबसे पुराना ग्रन्थ है,इस क्षेत्र से संबंधित ढेर सारी भौगोलिक,धार्मिक तथा सांस्कृतिकसामग्री है | दूसरे स्थान पर जैन ग्रन्थ आते है |
- जैनों के ग्रन्थ परिशिष्टपर्वन् भद्रबाहुचरित्र,कथाकोष आदि से यहां के प्रथम शती से तीसरी शती तक के धार्मिक-सांस्कृतिक जीवन के विषय में काफी कुछ पता चलता है |
- अग्रोहा इस धर्म का प्रधान केंद्र था | रोहतक का भी कई जगह उल्लेख है-वहां भी जैन धर्म का काफी प्रचार था | इसके अतिरिक्त,सोमदेव,पुष्पदंत आदि के ग्रन्थ बाद के हरियाणावी जीवन के विभिन्न पक्षों पर प्रकाश डालते है |
- तीसरे बौद्ध साहित्य से भी हरियाणा के विषय में काफी सामग्री मिलती है जिससे पता चलता है कि महात्मा बुद्ध ने हरियाणा के कई स्थानों में भ्रमण किया था |
- उनके दीघनिकाय के महानिदान सुत्त तथा सतीपठान सुत्त,मझम्मनिकाय के सतीपठान सुत्त,माग्न्दीय सुत्त तथा अनंजसप्पय सुत्त यहां प्रचारित हुए थे |
- मझम्मनिकाय से हरियाणा के राजनीतिक जीवन पर भी कुछ प्रकाश पड़ता है | दिव्यावदान से इस क्षेत्र में बौद्धधर्म के प्रचार तथा प्रसार के विषय में

जानकारी मिलती है | उसमें विशेषकर यहां के दो प्रधान बौद्ध केन्द्रों-रोहतक तथा अग्रोहा का बड़ा विस्तारपूर्वक वर्णन किया गया है |

- महाभारत का युद्ध हरियाणा(कुरुक्षेत्र) में लड़ा गया था और यह ग्रन्थ भी यहीं रचा गया था | अत:यह स्वाभाविक ही है कि 'महाभारत' से हरियाणा के तत्कालीन जीवन के विभिन्न पहलुओं से संबंधित महत्त्वपूर्ण जानकारी प्राप्त हो |
- इस प्रदेश की नदियां,वन,नगर,गाँवों,तीर्थो तथा सांस्कृतिक जीवन के विभिन्न पहलुओं का वहां विस्तृत वर्णन मिलता है |
- महाभारत के अतिरिक्त,पुराणों में भी हरियाणा के संबंध में काफी सामग्री पाई जाती है वामन पुराण तो इस क्षेत्र के महत्त्व को बखानता थकता ही नहीं | एक श्लोक में यहां के सात प्रसिद्ध वनों का जिक्र है तो दुसरे में यहां की नौ नदियों का | और भी बड़े काम की जानकारी है | अन्य पुराणों में भी काफी मात्रा में उपयोगी सामग्री है |
- पुराणों के अतिरिक्त,दुसरे संस्कृत ग्रन्थ,जैसे पाणिनि की 'अष्टाध्यायी' पतंजलि का 'महाभाष्य' आदि भी मूल्यवान है छठी-सातवीं शती के जीवन पर सम्राट हर्ष के दरबारी कवि बाणभट्ट का 'हर्षचरित' महत्त्वपूर्ण प्रकाश डालता है कश्मीर के कवि-इतिहासकार कल्हण की 'राजतरंगिणी' से भी हमें इस क्षेत्र के इतिहास की कई पहेलियां सुलझाने में सहायता मिलती है बहुत से दुसरे ग्रन्थों में भी काफी मूल्यवान संकेत है
- प्राचीनकाल से ही भारत में विदेशी यात्रियों का आना-जाना बना रहा है | इनमें से बहुत से यात्रियों,जैसे ग्रीक यात्री एरियन,चीनी यात्री फाहियान,हमून्त्सांग आदि ने भारत संबंधी अपने यात्रावृत आदि लिख छोड़े है | इन के ये सफरनामें हमारे इतिहास के महत्त्वपूर्ण स्त्रोत है |

प्रागैतिहासिक युग

- हमारे यहां से इस युग के मानव के रहने के साक्ष्य/प्रमाण-पत्थर के औजार आदि-शिवालक(कालका,पिंजौर क्षेत्र) और अरावली की पहाड़ियों से मिले है ये पत्तर,खुरचने,क्रोड़,कुल्हाड़े,गंडासे,सुआ,तक्षणी,बेधक आदि है | ये मोटे रूप से दो प्रकार के है :
    1. कोर,और
    2. फलेक

कोर औजार पत्थर की बाहर परतें उतार कर उसके अंदर कठोरभाग को घिस कर बनाए गए है, जब कि फलेक औजार बड़े पत्थर की बड़ी-सी परत को घिस कर पैना करके बनाए गए है | इन औज़ारों के कुछ नमूने आगे दिए गए है | इन औजारों को इनके निर्माण की तकनीक के आधार पर विद्वानों ने तीन अलग-2 कालों के बताया है और इन कालों के अलग-2 नाम दिए है :

1. पुरापाषाण काल
2. मध्यपाषाण काल
3. नवपाषाण काल

- पुरापाषाण कालको भी विद्वान् तीन कालों में बांटते है :निम्न,मध्य और उत्तर पुरापाषाण काल | पहले काल को वे पांच लाख से एक लाख वर्ष पूर्व का समय देते है |
- इस काल के औजार(गंडासे,कुल्हाड़े,विदारणी,खुरचने आदि) शिवालक क्षेत्र में चंडी मंदिर ,मनसा देवी,मेंहरणवाला,दामला,चंडी कोटला,पिंजौर,सुकेतड़ी,नया गाँव आदि स्थानों से और अरावली क्षेत्र में मानेसर,नवादा,पली,गोठड़ा आदि दो दर्जन स्थानों से मिले है |
- दुसरे काल का समय एक लाख से 40 हजार वर्ष के मध्य में रखा जाता है इस काल के औजार(छोटे गंडासे,कुल्हाड़े,तेज खुरचने,छेदक आदि) शिवालक क्षेत्र में पिंजौर,छामला,पपलाना,सूरज आदि स्थानों से और अरावली क्षेत्र में अनकर पहाड़ी,मेंवला,ओदा कोह,पलियागांव जमालपुर खोरी,हरचंदपुर,भोंडसी,मानेसर,गुडगांव(बाईपास) आदि स्थानों से मिले हैं |
- तीसरे काल का समय 40 हजार से 10 हजार वर्ष ई.पू. के बीच रखा जाता है | इस समय के औजार(बहुत हल्के और ,भूतला,कोट पैने गंडासे,कुल्हाड़े,छेदक,तक्षणी,ब्लेड आदि) केवल अरावली क्षेत्र से भोकरी,नवादा कोह,गोठड़ा,दालमपुर,सिकन्दरपुर रानी मड़ी पहाड़ा आदि स्थानों पर से मिले है |

मध्यपाषाण काल

- पूरापाषाण युग के काफी समय बाद मध्यपाषाण युग(लगभग 10 हजार ई.पू.)आया | इस युग में जलवायु में काफी परिवर्तन हो गया | पृथ्वी का तापमान बढ़ने से पहाड़ों की बर्फ पिंघल गई | नदियों में खूब पानी हो गया | कितने ही नए

पेड़,पौधे,घासे उग गई | बर्फ का पड़ना कुछ कम होने से बर्फीली नदियां छोटी हो गई |

- जगह-2 घने जंगल उग गए | जंगली जौ और गेहूं भी इस समय उगनेलगे थे | इन्हें देखकर उन्होंने इन्हें उगाना शुरू किया | और इस प्रकार कृषि का क्रांतिकारी अविष्कार हुआ | पिंजौर(कालका)क्षेत्र से हल जैसी कोई चीज और खेती में प्रयुक्त होने वाले कुल्हाड़े आदि मिले है,जो इस बात को पुष्ट करते है वे पत्थर की सुइयां भी बनाना जान गए थे जो घास से बने डोरों से खल सीने के काम आती थीं |
- इस युग के औजार पहले युग के औज़ारों से सुगढ़,हल्के,पैने,बारीक़ और सुंदर हैं | ये औजार अरावली क्षेत्र से मेंलवा पहाड़ी,नोदा कोह,पलियागाँव पहाड़ी,मोहताबाद पहाड़ीगोठड़ा,धौज,सिरोही,खोरी,जमालपुर,टेथुर,निमौर,छतरपुर,हरचंदपुर,सिकन्दरपुर निमड़ीवाली पहाड़ी नागरी की ढाणी,बंधवा घाटी,धलावत,भूतला और मानेसर आदि से मिले है |

नवपाषाण काल

- मध्यपाषाण युग के कोई छः सात हजार वर्ष बाद नवपाषाण युग आया | यह कैसे हुआ ? धीरे-धीरे हजारों वर्षो के परिश्रम से बटोरे हुए ज्ञान से उन्होंने और उन्नति की | फलतः उसके उस समय के बलुआ पत्थर,क्वाईट आदि से बने औजार काफी उत्तम स्तर के है | ये अधिकतर घिस कर बनाए गए है |

सीसवाल

- इस सभ्यता के अवशेष सबसे पहले सीसवाल गाँव में मिले है | यह गाँव हिसार से 26 किलोमीटर की दुरी पर चौतंग नहर पर स्थित है | सन् 1970 में इसकी सीमित (लगभग 2×2×2 मी. की) खुदाई हुई | खुदाई के दौरान प्रारंभिक चरण से जो सामग्री प्राप्त हुई है, उसमें मिट्टी के बर्तन तथा ठिकरे अधिक मात्रा में मिले है ज्यादातर मृदभांड हाथ के बने हुए है |
- इसका मतलब यह है कि इस संस्कृति के जनकों को पहले चाक के विषय में जानकारी नहीं थी | पर उनकी यह स्थिति बहुत ही थोड़े समय रही लगती है,
- क्योंकि इसी स्तर पर थोड़े ही ऊपर कुछ मृदभांड ऐसे मिले है जो कि धीमी गति से चलने वाले चाक पर बने हुए है |
- इन बर्तनों की लाल सतह पर सफेद और काले रंग से कुछ डिज़ाइन भी बनाए गए है | कुछ मृदभांड स्लेटी रंग के भी है |
- दूसरे चरण में स्थिति एकदम बदल जाती है | अब हाथ से बने भांड नदारद से है : केवल चाक पर सधे हाथों से सुंदर डिज़ाइन वाले चित्रित मृदभांड है | इन से मिलते-जुलते मृदभांड कालीबंगा(राजस्थान) में भी मिलते है |
- मृदभाण्डों के अतिरिक्त यहां से कुछ अन्य सामग्री भी मिली है,जिसमें कुछ मिट्टी की चित्रित चुडियां,गणिए आदि है | एक ताबें के हत्थे वाला गंडासा भी मिला है इससे पता चलता है की यहां ताबं का प्रयोग होने लग गया था | यहां कुछ पत्थर के उपकरण भी मिले है-पर ये हैं बहुत ही थोड़े |

मिताथल

- मिताथल भिवानी जिला मुख्यालय से कोई 10 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है | यहां से एक 'प्राचीन थेह' से सीसवाल संस्कृति के अवशेष मिले है | उत्खन्न के दौरान कुछ मकानों के अवशेष मिले है | ये मकान धुप में सुखाई कच्ची ईटों के बने थे | ईटें 10×20×30 से.मी. आकार की है |इन मकानों की छतें छप्परनुमा (घास-फूस) की होती थीं | बस्तियां कालीबंगा की तर्ज पर बसी थीं | यहां से मृद्भाण्ड भी काफी मिले हैं | इनके मटके, चौड़े मुंह के जार, कटोरे, प्याले, आदि प्रमुख हैं | ये मृद्भांड चाक पर बने हैं और आवा में खूब पके हैं | ये मोटे हैं और इनका रंग लाल है | इनकी गर्दन पर काले रंग की पट्टी लगाई गई है | कुछ एक के किनारे पर भी काले रंग की पट्टी है | कुछ भाण्ड स्लेटी रंग के भी मिले हैं | मृद्भांडोंके अतिरिक्त यहां से पकी मिट्टी के मनके, काले रंग से चित्रित पकी मिट्टी की चूड़ियां, फियांस की हरी चूड़ियां, पत्थर की गेंदें, पत्थर के मैलखोरा, ताम्बे की चूड़ियां, हाथी दांत की पिन आदि कई चीजें मिली हैं |

बनावली

- बनावली फतेहाबाद से लगभग 14 कि.मी. की दूरी पर स्थित छोटा-सा गाँव है | इसके निकट दो

टीलों का एक उजड़ा थेह है जो कि पुरातत्व की दृष्टि से अत्यधिक महत्त्व को आंका गया है | इसकी विधिवत् खुदाई 1974 से प्रारंभ होकर बाद में कई सत्रों में हुई | यहां से सीसवाल संस्कृति के समय की कई चीजें मिली हैं | बस्ती की एक सुरक्षा दीवार का कुछ भाग मिला है |

- इस के अन्दर की तरफ कच्ची ईंटों के बने घर सीधी कतारों में खड़े हैं | गोल आकर का चूल्हा और एक भट्टी मिली है | एक कमरे में गोल आकर का 1 मीटर लंबा और 1 मीटर घर गडढ़ा है जो शायद अनाज रखने के काम आता था | कुछ गड्ढ़े रहने के लिए भी बनाए जाते थे, ऐसा आभास होता है | कहीं-कहीं पक्की ईंटें भी मिली हैं | ईंटों का आकार 1:2:3 अनुपात में है |
- लोग ताम्बे का प्रयोग भी करते थे | दुर्लभ पत्थरों के जेवर भी मिले हैं | यहां जो मृद्भांड मिले हैं ये दो तरह के हैं | पहले मृद्भांडों का रंग गुलाबी से लेकर पांडु रंग तक का है | इनकी परतें पतली हैं और वजन में ये बहुत हल्के हैं | गोल बर्तन, कुण्डे आदि भी हैं |
- ये तिरछी, त्रिकोणीय लहरदार रेखाओं से चित्रित हैं | इनकी गर्दन पर काले रंग की मोटी पट्टी है | दूसरे प्रकार के मृद्भांड पहली प्रकार के मृद्भांडों से ज्यादा सुन्दर औए अच्छे हैं | ये तेज चाक पर बने हैं और पके भी खूब हैं | इनमें मटके,कुंडे, जार,प्याले,कटोरे आदि हैं | इन पर भी चित्रण हुआ है |
- मृद्भांडों के इलावा बच्चों के सुन्दर खिलौने (छतरीदार गाड़ी) आदि भी मिलते हैं |

बालु

- बालु गाँव कैथल शहर से दक्षिण में लगभग 20 कि.मी. की दूरी पर स्थित है | गाँव से बाहर उजड़े टीले के महत्त्व का तो पुरातत्वविदों को काफी समय से ज्ञान था, परन्तु इसकी विधिवत् खुदाई 1979 ई. में प्रारम्भ हुई | यह खुदाई 15 सत्रों तक चली | खुदाई के दौरान यहां से तीन अलग-अलग कालों से संबंधित अवशेष मिले हैं |
- प्रथम काल के अवशेष सीसवाल संस्कृति से सम्बद्ध हैं | इनमें सबसे महत्त्वपूर्ण कच्ची ईंटों के मकान के अवशेष हैं | इन ईंटों का आकार 1:2:3 के अनुपात में है |
- इसके अतिरिक्त यहां के लोगों द्वारा प्रयोग में लिए जाने वाले मृद्भांड भी मिले हैं | ये कई रंग के हैं-लाल, पांडु,स्लेटी-और ये चाक पर बनाए गए हैं | इन पर काले रंग से चित्रण भी किया गया है | जैसे मटकों की गर्दन तथा कन्धों पर काले रंग की मोटी पट्टी खिंची हुई है |
- कई एक पर खड़ी, लेटी,आड़ी-तिरछी, लहरीय, कंघिय (कंघे जैसी किसी चीज से बना डिजाइन) आकृतियां बनी हैं |
- मटकों के अतिरिक्त यहां से कुंडे, प्याले, कटोरे, आदि भी मिले हैं | मिट्टी के बने मनके, चूड़ियां, गेंदें और कुछ दुर्लभ पत्थरों के मनके भी मिले हैं

फरमाणा

- यह गाँव महम से उत्तर-पूर्व दिशा में लगभग 13 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है | यहां एक काफी बड़े पुराने से खेड़े से वर्ष 2007-2009 के दौरान की गई खुदाइयोंमें पुरातात्त्विक महत्त्व की काफी सामग्री प्राप्त हुई है |
- जिसके आधार पर यह अनुमान लगाना उचित लगता है कि यह स्थान सीसवाल संस्कृति के प्रारंभिक चरण से सम्बुद्ध है | यहां 2-3 मीटर के कुछ गड्ढे मिले है जिन की (खुदाई से बनी) दीवारें अंदर से अच्छी प्रकार से लिपी पुती है |
- कई गड्ढ़ोंमें चूल्हे/तंदूर भी बने मिले है |इनके मृदभांड दोनों प्रकार के है, हाथ के बने और चाक पर उतरे | ये लाल रंग के है तथा इन पर काले रंग से चित्रण किया गया है और देखने में साधारण है | इन पर चित्रण-कुछ पर आड़ी-तिरछी रेखाओं से ज्यामितीय अलंकरण भी हुआ और कुछ पर अन्य डिजाइनों से |

गिरावड़

- यह गाँव महम तहसील(रोहतक) में मदीना गाँव से कोई 2-2.5 किमी की दुरी पर स्थित है | 2007 ई. में यहां से विधिवत् उत्खन्न के दौरान काफी महत्त्वपूर्ण पुरातात्त्विक जानकारी प्राप्त हुई है | यद्यपि उत्खन्न सीमित था, फिर भी 13 गड्ढ़े, 2 भट्ठियां,काफी मृदभांड आदि मिले है |
- गड्ढ़े(2-3 मीटर लम्बे,चौड़े) कुछ पुरातत्त्वविदों का ख्याल है कि ये रहने के काम आते थे | इनमें चूल्हे,तंदूर आदि भी बने है | इनकी अंदर की दीवारें अच्छी तरह से लिपी-पुती है | कई गड्ढ़ों के ऊपर खम्भे आदि गाड़ने के संकेत है |

- यहां मृदभांड आदि के पकाने की दो भट्ठियां भी मिली है | जो मृदभांड मिले है उन में से कुछ मृदभांड हाथ के तथा कुछ चाक पर उतरे है | ये लाल और स्लेटी रंग के है | और इन पर काले और सफेद रंगों से कई प्रकार के चित्रण किए गए है |

भिरड़ाना

- यह गाँव जिला फतेहाबाद में है गाँव के बाहर,उत्तर में,4-5 मीटर ऊँचे टीले की 2003-2005 ई. में हुई खुदाई के दौरान सीसवाल संस्कृति से संबंधित काफी जानकारी मिली है फरमाण,गिरावड़ आदि स्थानों की तरह यहां भी कई गड्ढे(2-3मीटर लम्बे-चौड़े) मिले है |
- इनकी अंदर की दीवारे भी अच्छी तरह से लिपि-पुती है | कइयों पर खम्भे गाड़े जाने के संकेत भी है जिनसे सहज में अनुमान लगाया जा सकता है कि गड्ढों पर घास-फूस की छतें भी डाली जाती थीं कुछ गड्ढों में चूल्हे,तंदूर आदि मिले है,

कुणाल

- यह गाँव फतेहाबाद जिले में है यहां से भी खुदाई के दौरान सीसवाल संस्कृति से संबंधित अवशेष मिले है | गिरड़ाना की तरह भी 2-3 मीटर गड्ढे मिले है जिन की अंदर की दीवारें खूब लिपी-पुती है | यहां भी कई गड्ढों पर खम्बे आदि लगाए जाने के संकेत मिले है |

हड़प्पा संस्कृति

हरियाणा में हड़प्पा संस्कृति

- जहाँ तक हरियाणा का संबंध है, अब तक इस संस्कृति से संबद्ध बहुत सारे स्थानों का सर्वेक्षणों द्वारा पता चलता है | इस संस्कृति के प्रतिनिधि सिंध तथा पंजाब से उखड़ कर आए और यहां बसे थे | इनमें से कई बस्तियों की विधिवत् खुदाई भी हो चुकी है जिनमें से कुछ महत्त्वपूर्ण पुरस्थलों का विवरण यहां दिया जा रहा है |

मिताथल

- मिताथल भिवानी से लगभग 10 किलोमीटर की दुरी पर स्थित है | यहां से दो भागों में बंटे हुए एक प्राचीन टीले की खुदाई के दौरान हड़प्पा संस्कृति संबंधित काफी अवशेष मिले है
- जिनसे हमें उस समय की भवन निर्माण पद्धति,मृदभांडों के बनाने के तौर-तरीके और लोगों द्वारा प्रयुक्त होने वाली घरेलू वस्तुएं, आभूषण,बच्चों के खिलौने आदि के विषय में जानकारी मिलती है |
- मकानों के अवशेष टीले के दोनों भागों के प्रारंभिक स्तरों में काफी बड़ी संख्या में मिले है | ये सुनियोजित योजना के तहत बने हुए है | इनकी ईटें कच्ची है,परन्तु है काफी मजबूत |
- मकान कतारों में बने है सारे नक्शे पर नजर डालने से लगता है कि नगर योजनाबद्ध तरीके से चौपड़ की बिसात के नमूने पर बसा है सड़कें 1.50 मी. से 3.10 मी तक चौड़ी है | इनमें गलियां मिलती है जो कि पूर्व-पश्चिम में तथा उत्तर-दक्षिण दिशाओं में जाती है |

यहां प्रकार के मृदभांड भी मिले है -

- ये मृदभांड खूब गुदी हुई मिट्टी के बने है, और काफी ताप देकर पकाए गए है जिससे इनकी कोरें पक कर खूब लाल हो गई है | इन पर हल्की लाल स्लिप का प्रयोग भी किया गया है और किनारों तथा कंधों पर साधारणत: काले रंग की पट्टी पुती है कुछ मृदभांड स्लिप तथा पट्टी के बिना भी है | ये मृदभांड चौड़े तथा संकरे मुंह वाले संग्राहक- मृदभांड,ग्लोब आकर के मटके,कुंडिया,प्लेट,बीकर,छिद्रदार जार, पत्थर के बाट,सिल-बट्टे आदि भी मिले है |
- यहां से प्राप्त अन्य चीजों में दुर्लभ पत्थरों,फियांस,स्टेटाइट तथा मिट्टी के बने मनके है यहां से एक अंगूठी भी मिली है | इनके अतिरिक्त मिट्टी,फियांस और तांबे की बनी चूडियां,तांबे,का हार्पून(भाला) और हाथी दांत की पिन भी मिली है बच्चों के मिट्टी के कई प्रकार के दिलचस्प खिलौने भी मिले है |

बनावली

- बनावली यह फतेहाबाद से 15 किलोमीटर की दुरी पर स्थित है | इसका उत्खन्न सबसे पहले 1974 में हुआ था,जिसमें हड़प्पन संस्कृति के बहुत सारे अवशेष प्राप्त हुए है |
- इनसे पता चलता है कि यह नगर भी अन्य हड़प्पन नगरों की तर्ज पर शतरंज के बिसात के नमूने की सुनिश्चित योजना के अनुसार दो भागों में बसा हुआ था | पश्चिम भाग बड़ा और महत्त्वपूर्ण था | यहां संभवतः अधिकारी तथा बड़ें लोग रहते होगें |

- पूर्वी भाग,साधारण था,यहां सामान्य जन रहते होंगे | दोनों ही भग सुरक्षित थर और एक दुसरे से बीच में एक दीवार से जुड़ें हुए थे |
- नगर में काफी सडकों के होने के साक्ष्य मिले है ये सड़कें उत्तर -दक्षिण जाती थी और खुली थी,पूर्व-पश्चिम दिशा को जाने वाली तंग थी | ऐसा संभवत: पश्चिम की तेज हवाओं और दक्षिण-पूर्व मानसून वर्षा के प्रहारों के बचाव के लिए किया गया |
- कुछ बड़े मकानों के अवशेष मिले है तो कुछ छोटों के है, जोकि सडकों के दोनों किनारों पर बने हुए थे |
- यहां से घर-गृहस्थी की बहुत सी चीजें मिली है, जैसे चूल्हे,तंदूर ओवन आदि | कई प्रकार के मिट्टी के बर्तन-भांडे भी मिले है-इनमें से कुछ लाल रंग के है और कुछ स्लेटी रंग के |
- बर्तनों पर सुंदर पुताई और चित्रकारी भी की गई है |कई प्रकार के दुर्लभ वस्तुओं से बने जेवर,चूड़ी,माला,मनिएं आदि मिले है, तुलाई के बाट-बट्टे और बच्चों के खिलौने भी प्राप्त हुए है | सोने,तांबे आदि के टुकड़े भी मिले है जिनसे पता चलता है कि ये लोग इन धातुओं के विषय में जानकारी रखते थे |
- कुछ मुद्रांक भी मिले है | इन पर जंगली बकरी ,दरियाई घोड़े तथा अन्य कई प्रकार के पशुओं के विचित्र है | एक मुद्रांक पर विचित्र प्राणी की आकृति अंकित है -उसका शरीर शोर का है और सींग बैल के | उस पर कोई लेख भी है जो कि आज की स्थिति में एक अनबूझा पहेली के सिवाय कुछ नहीं |
- यहां एक घर से अधजले जौ का एक ढेर भी मिला है | घरों से कई पशुओं की हड्डियां भी मिली है जिनसे विद्वानों ने यह निष्कर्ष निकाला है कि यहां लोग मांस भक्षणकरते थे |

राखीगढ़ी

- राखीगढ़ी हिसार जिले में एक साधारण गाँव है जो कि नारनौंद कस्बे से लगभग 5 किलोमीटर की दुरी पर स्थित है | गाँव के बाहर विस्तृत क्षेत्र में हड़प्पा संस्कृति का अति प्रसिद्ध केंद्र रहा था | हड़प्पा एवं मोहनजोदड़ो के पाकिस्तान में होने की वजह से भारत में,यह हड़प्पन से संबुद्ध नगरों में सबसे बड़ा है |
- यहां भी अन्य हड़प्पन नगरों की तरह नगर दो भागों में विभक्त था पश्चिमी भाग बड़े लोगों के लिए था और पूर्व भाग सामान्य के लिए | सारी बस्ती पूरी तरह सुरक्षित थी-चारों तरफ परकोटे के होने के संकेत है |
- इस सब के अतिरिक्त, यहां से कई प्रकार के मृदभांड तथा सामग्री भी मिली है | जो कि इस संस्कृति से संबुद्ध अन्य नगरों से मिली सामग्री जैसी है | अधिक विस्तार से उत्खन्न होने पर यहां से बहुत ही मूल्यवान सामग्री मिलने की सभावना है |

फरमाण

- फरमाण गाँव महम के कस्बे से कोई 13 किलोमीटर की दुरी पर उत्तर-पश्चिम दिशा में स्थित है यहां 2007-08 और 2008-09 में खुदइयों के दौरान पुरातत्त्व महत्त्व के बहुत-से अवशेष मिले है, जिन्हें पुरातत्त्वविदों में निम्नोक्त दो संस्कृतियों से संबंधित माना है -
  1. आद्यैतिहासिक(सीसवाल) संस्कृति और
  2. हड़प्पा संस्कृति
- हड़प्पा संस्कृति से संबंधित मृदभांडों तथा अन्य छोटी-2 वस्तुओं के इलावा हड़प्पन मुगरें यहां मिली है | टीले से कुछ दूरी एक जगह कब्रिस्तान होने के अवशेष भी मिले है | यह कब्रिस्तान लगभग पाँच एकड़ में फैला है य्हानी से अब तक कई नरककाल मिल चुके है |
- हड़प्पन लोग अपने मृतकों को बड़े सम्मान के साथ दफनाते थे | उन के आभूषण तक नही उतारे जाते थे | मृदभांडों में खाने-पाने का सामान आदि भी रखा जाता था |

बालु

- बालु गाँव कैथल से लगभग 20 किलोमीटर की दुरी पर स्थिति है उत्खन्न के दौरान जो अवशेष के अनुसार मकान कच्ची ईटों के बने होते थे,
- यहां से प्राप्त मृदभांड मोटे है और इनका रंग ज्यादातर लाल है | कुछ एक स्लेटी रंग के भी है | सभी मृदभांड भलीभांति गंदी हुई मिट्टी से बनाए गए है और खूब पकाए हुए है |
- इनमें बड़े-बड़े संग्रहण मृदभांड,छिद्रदार बर्तन,मटके,साधार तश्तरियाँ,गॉब्लेट,बीकर,हत्थेदार प्याले आदि

मुख्य है | इन पर काले रंग से चित्रण भी हुआ है | पीपल के पत्ते,एक-दुसरे को काटते घेरे,खड़ी,लेटी रेखाएं आदि के चित्र अधिक है |

- पकी मिट्टी की बनी पुशओं की मूर्तियां,चूडियां,खिलौना-गाडियां,पहिए,गैंदें,हडडी के सूए,पत्थर की गैंदें,कुछ ताम्बे के उपकरण आदि भी यहां से मिले है |

वैदिक संस्कृति

- पुरातात्विक सर्वेक्षणों से चित्रित धूसर मृदभांडीय संस्कृति से संबंधित हरियाणा में तीन सौ से अधिक ठिकानों का अब तक पता चला है | इनमें से कोई दर्जनभर का उत्खन्न भी हो चूका है,जिनमें सुघ,भगवानपुर,राजा कर्ण का किला,दौलतपुर आदि मुख्य है |
- चूँकि ये सब उत्खन्न बड़े ही सीमित है,इसलिए यहां से कुछ मृदभांड और कुछ छोटी-मोटी अन्य वस्तुओं के इलावा कोई खास अवशेष नहीं मिले है | हो सकता है कि बड़े पैमाने पर खुदाई करने से कुछ मूल्यवान सामग्री प्राप्त हो जाए |
- सौभाग्यवश,वैदिक संस्कृति के विषय में हमें अन्य साधनों,जैसे पुस्तकों, आदि से बहुत ही मूल्यवान सामग्री मिल जाती है,जिसके आधार पर पुरातत्त्व की अधिक सहायता न होने पर भी वैदिक युगीन जीवन का हम अच्चा खासा चित्र प्रस्तुत कर सकते है |
- हरियाणा में पुरातत्ववेत्ताओं की ऐसी 14-15 बस्तियां मिली है जहां यहां के पुराने आदिवासी(सीसवाल,हड़प्पन आदि) और आर्य जन एक साथ रहते थे | इसके आलावा जो अकेले आर्यो की बस्तियां मिली है उन में भी कोई ऐसे चिहन नहीं मिलते कि ये किसी प्रकार की मार-काट के बाद,किसी को उजाड़ा कर बसाई गई हो |
- धीरे-2 वैदिक संस्कृति अलबत्ता पहली संसकृतियों पर हावी हो गई |
- आज से कोई अढ़ाई हजार वर्ष पहले ये लोग सरस्वती,दृषद्वती की वादियों में, अर्थात् हरियाणा में बस गए थे अपनी आर्थिक तथा सामाजिक स्थिति को उन्नत करके इन्होनें अपने जीवन के हर पक्ष का पूरा सशक्तिकरणकिया | हरियाणा में रहते हुए ही इन्होनें अपनी भाषा अपने साहित्य आदि को भी खूब उन्नत किया | फिर धीरे-2 शेष भारत में मिले |
- समृद्ध आर्यजनों का पहला टकराव उनके इलाकों से कुछ दूर रह रहे आदिवासी लोगों से हुआ | संभवत: ये आदिवासी वे थे जो उनके 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम' के सिद्धांत के प्रभाव से परे अपने को 'उच्च' समझ कर अलग रह रहे थे | आर्य लोगों ने इन्हें हराया और 'आर्य'(उनकी परिभाशानुकुल अच्छे मनुष्य)बना दिया | जो आर्य नहीं बने वे दास या दुस्य कहलाने लगे | ऐसे जनों के यहां के पणि लोग काफी प्रसिद्ध थे | संभवत: इन पणियों का स्थान आधुनिक पानीपत(पणिप्रस्थ) था |
- मनु वैवस्वत यहां का पहला पराक्रमी राजा हुआ,ऐसी परंपरा है | उसके चार बेटे थे जिनमें से सुद्यम्न और शर्याति,दो का संबंध हरियाणा से था | सुद्यम्न के पास सरस्वती के ऊपर और संभवतः सतलुज से नीचे का आजकल के अंबाला तथा कुरुक्षेत्र जिलों का उत्तरी भाग था
- शर्याति के पास राजस्थान की सीमा तक मत्स्य(मेंवात) आदि का क्षेत्र था | उन दोनों भाइयों में शर्याति ज्यादा सरकश था | उसने भार्गव ऋषि च्वयन के पुरोहितत्तवमें अश्वमेध यज्ञ का आयोजन किया था |
- नारनौल के पास ढोसी नामक स्थान के ऋषि च्यवन से जुड़े होने की बड़ी प्रबल परंपरा है सभवत: यहीं कहीं नारनौल के आसपास शर्याति की राजधानी रही होगी |
- सभवत: शर्याति नि:संतान मर गया था और इसलिए उसका राज्य भी सुदयम्न के उत्तराधिकारी को मिल गया था | दुसरे शब्दों में अब,सतलुज से साहबी नदी तक समस्त हरियाणा प्रदेश के वे स्वामी बन गए थे | कुछ पीढ़ियों बाद इसी कुल में राजा पुरु हुए,जिनके नाम से यह वंश पौरव वंश हो गया |
- वैदिक काल तक हरियाणा के लोग सहज धार्मिक,सरल तथा सदाचारपूर्ण जीवन जीते हुए रहे, किन्तु उसके बाद उनमें काफी परिवर्तन आ गए | विशेषत: महाभारत के बाद उसका धर्म काफी जटिल बन गया,पुरोहितों और ब्राहमणों का बोलबाला हो गया,यज्ञ और कर्मकांड बड़े खर्चीले और जटिल हो गए | कई कुरीतियां

जीवन का अंग बन गई | अब शिक्षा केवल कुछ लोग ही प्राप्त कर सकते है धर्म एक खर्चीला धंधा हो कर रह गया था,जिसके माध्यम से स्वार्थी लोग जनता का शोषण करते थे | इन धार्मिक-सामाजिक जटिलताओं के विरोध में चले जैन तथा बौद्ध धर्मो का विकास हुआ |

कौरव वंश

- अतंत: पौरव वंश के प्रतापी राजा दुष्यंत ने यहां एक सुदृढ़ राज्य कायम किया |
- दुष्यंत का पुत्र और उत्तराधिकारी भरत अपने पिता से भी इक्कीस निकाला | उसने 'सरस्वती नदी पर थानेसर से लेकर गंगा से आगे अवध तक का विस्तृत भूभाग जीत कर' अपने पैतृक राज्य को खूब फैला दिया | उसके नाम से उनका वंश भरत कहलाया और हमारा देश भारतवर्ष |
- उसकी छठी पीढ़ी में राजा हस्ती हुए,जिसने हस्तिनापुर(जिला मेंरठ) नाम का नगर बसा कर उसको अपना मुख्यालय बना दिया |
- राजा हस्ती के उत्तराधिकारी ने काफी लम्बे समय तक वहां राज किया परन्तु,दुर्भाग्यवश, राजा संवरण के समय पंचाल जनपद के एक प्रतापी राजा सुदास ने उन्हें निकल कर वहां अपना राज्य कायम कर लिया |
- सुदास ने हरियाणा और पंजाब के दस राजाओं के संघ को भी हराया था | परन्तु,सुदास की यह ऐतिहासिक विजय अधिक दिनों तक स्थायी न रह पाई |
- राजा संवरण ने अपनी शक्ति पुन:संगठित की ओर शुत्र से अपना राज्य ही नहीं,अपितु उसका राज्य,अर्थात् पंचाल प्रदेश, भी छीन लिया |
- वीरवर संवरण का ही पुत्र कुरु था,जो उसके बाद हस्तिनापुर का राजा बना और जिसने पौरव वंश को अपना देकर कौरव वंश बनाया |

राजा कुरु

- राजा कुरु अत्यंत पराक्रमी और साहसी था | उसने अपने आस-पास के कई प्रदेश जीत कर अपने राज्य को खूब बढ़ाया | परन्तु उसकी सबसे महत्त्वपूर्ण उपलब्धि थी युमना पर के सरस्वती-सिंचित थानेसर के आस-पास के 'पवित्र क्षेत्र' पर अधिकार करना,जिससे वह भारत के सांस्कृतिक इतिहास में अम्र पद को प्राप्त करने में सफल हुआ |
- सामाजिक-सांस्कृतिक उन्नति और राजनैतिक स्थिरता से कौरव राज्य काफी सुदृढ़ हो गया | पास-पड़ोस में नहीं दूर-2 तक इस की धाक बैठे गई | परन्तु राजा शांतनु के समय स्थिति अचानक बदलने लगी |
- बहमा शुत्रओं में कौरव राज्य की ओर वक्रदृष्टि से देखने का साहस आ गया | महाभारत के प्रसिद्ध युद्ध से कुछ समय पूर्व उत्तर-पश्चिम में बसने वाले गांधार तो कौरव राज्य में ही घुस आए | शांतनु के ज्येष्ठ पुत्र वित्रगद ने शुत्र सेना का कुरुक्षेत्र के मैदान में सरस्वती के तट पर रोका और उनसे भीषण युद्ध किया |
- इस युद्ध को कुरुक्षेत्र का प्रथम युद्ध कहते है यद्यपि चित्रांगद इस युद्ध में वीरगति को प्राप्त हुआ,पर मैदान कौरवों के हाथ में रहा | लगभग इसी समय गंगा-युमना दोआब के पंचालों द्वारा भी कौरवों पर आक्रमण हुआ | परन्तु कौरवों ने उन्हें भी पराजित करके खदेड़ दिया |
- राजा शांतनु की मृत्यु के बाद उसका पुत्र विचित्रवीर्य राजा बना | दुर्भाग्यवश इसकी भी अकाल मृत्यु हो गई | उसके दो पुत्र (नियोग से)थे-धृतराष्ट्र और पांडु |
- चूँकि धृतराष्ट्र अंधा था,अत: उसकी जगह छोटा पुत्र पांडु 10 वर्षो तक राज करता रहा | जब धृतराष्ट्र का पुत्र दुर्योधन व्यस्क हुआ तो पांडु ने, उस समय के नियम अनुसार,उसे राज्य का भार सौंप दिया |
- दुर्योधन के समय ही महाभारत का युद्ध हुआ,छठी शताब्दी ई.पू. के कुरु जनपद भारत के महाजनपदों में से एक था | महात्मा बुद्ध स्वयं यहां आए थे और यहां के लोगों को धर्मोपदेश दिया था |
- मौर्यों का अभ्युदय होने पर उसके जनपद राज्य का भाग रहा | लेकिन उस समय भी कुरुक्षेत्र का ह्रास नही हुआ,बल्कि उसके वैभव में अभिवृद्धि ही हुई | इसके बाद यौधेयगण का राज कायम हुआ तब भी यही कुछ हुआ |
- इसके बाद इलावा,हरियाणावासियों ने,यौधेयों के साथ मिलकर,विदेशीशक्तियों(कुषाण आदि) को यहां से खदेड़ा | फिर गुप्तों से भी संघर्ष हुआ

था | परन्तु वीरवर समुद्रगुप्त ने उन्हें अपने अधीन करके यहां अपना अधिपत्यअथ्पित कर लिया |

- जब गुप्त शक्ति क्षीण हुई तो कुरुक्षेत्र को उत्तरी भारत के अन्य प्रदेशों की तरह हुण आदि विदेशी आक्रमणकारियों के प्रहार झेलने पड़ें | कुछ समय के लिए तो धर्मक्षेत्र-कुरुक्षेत्र हूणों के राज्य का अंग भी हो गया था |
- महाभारत के युद्ध परिणाम बड़े भयकर रहे | दुर्योधन का वंश अधिकांशत:नष्ट नही हो गया | विजयी पक्ष के बड़े धर्मराज युधिष्ठिर राजा बने | परन्तु वे अपने एवं पूज्य जनों की हत्या और युद्ध के खून-खराबे इतने दु:खी हो गए कि कुछ समय बाद अर्जुन के पौत्र परीक्षित को राज्य सौंप कर अपने भाइयों तथा द्रौपदी के साथ हिमालय की तरफ चले गए,जहां उनकी मृत्यु हो गई | युद्ध का असर केवल कौरव-पांडवों पर हीनहीं किन्तु उत्तरी भारत की राजनीति और जीवन के हर पक्ष पर पड़ा |

पुष्पभुतियों का अभ्युदय

- हरियाणा प्रदेश पर,जो उस समय श्री कंठ जनपद कहलाता था,पुष्पभूति नामक एक सरदार ने अपनी पताका फहरा दी,संभवत: नागवंश के किसी श्रीकंठ नामक शासक ने प्राचीन काल में अपने नाम पर हरियाणा प्रदेश को यह नाम दिया था | बाणभट्ट ने 'हर्षचरित' में पुष्पभूति के विषय में काफी लिखा है -

प्रभाकरवर्धन

- समसामयिक साक्ष्यों से पता चलता है कि प्रभाकरवर्धन ने अपने पराक्रम के बलबूते पर 'महाराजाधिराज परमभट्टारक' तथा 'प्रतापशील' की उपाधियांधारण कर रखी थीं | वह अनेक युद्धों का वीर विजेता था और उसकी वीरता के चर्चे उत्तरी भारत के घर-2 में सुने जा सकते थे |
- बाणभट्ट के अनुसार,वह हुण रूपी हरिणों के लिए सिंह,सिंघुराज के लिए ज्वर,गुर्जर प्रदेश के लोगों की नींद को हरने वाला,गांधरराज के लिए कूटपाकल नामक महामारी, लाट के लोगों की चंचलता या पटुता को हरने वाला और मालवराज की लक्ष्मी-रूपी लता को कोट गिराने वाला परशु था |
- प्रभाकरवर्धन का राज्य डॉ.आर.एस.त्रिपाठी के अनुसार,उत्तर में पंजाब से लेकर दक्षिण में मरुप्रदेश तक फैला हुआ था | पूर्व में युमना नदी इसकी सीमा बनाती थी तो पश्चिम में फिर मरुप्रदेश |

हर्षवर्धन

- बाणभट्ट के अनुसार सन् 590 ई. में प्रभाकरवर्धन के घर हर्षवर्धन का जन्म हुआ था | हर्ष की माता का नाम यशोमती देवी थी | हर्ष के दो भाई-बहन | राज्यवर्धन तथा राजश्री भी थे |
- हर्ष बड़ा तीव्र बुद्धि वाला था | उसने थोड़े ही समय में राजनीती,प्रशासन,कूटनीति,सैन्य संचालन आदि विषयों का पूर्व ज्ञान प्राप्त कर लिया | इसके अतिरिक्त उसने ज्ञान विज्ञान के अनेक पक्षों का गंभीरअध्ययन भी किया था | साहित्य में उसकी विशेष रूचि थी और वह शीघ्र ही परिश्रम करके बड़े ऊंचे दर्जे का कवि तथा लेखक बन गया था |
- सन् 605 में प्रभाकरवर्धन का देहांत हो गया |राज्यवर्धन ने राज्य संभाल लिया | दुर्भाग्य से राज्यवर्धन के गद्दी पर बैठते ही पुष्पभूति वंश के शुत्रओं ने चारों तरफ सर उठाना शुरू कर दिया |
- मालव के राजा देवगुप्त ने गौड़ देश(बंगाल) के राजा शंशाक से मिलकर राज्यवर्धन के बहनोई(राज्यश्री के पति) कन्नौज-नरेश ग्रहवर्मा पर आक्रमण करके उसे मार डाला और राजश्री को बंदी बना लिया | तत्पश्चात् उन्होंने स्थानेश्वर पर आक्रमण करने की योजना बनाई | जब यह दु:खद समाचार राज्यवर्धन ने सुना तो 'उसने शुत्रओं पर तुरंत आक्रमण कर दिया,अत्यधिक सीधे स्वभाव का होने के कारण वह देवगुप्त तथा गौड़राज शंशाक के जाल में फंस गया,जिन्होंने धोखे से उसका वध कर दिया |
- राज्यवर्धन की मृत्यु के उपरांत हर्ष गद्दी पर बैठे | बाण ने हर्ष के राज्यारोहण का अपने महान् ग्रथ 'हर्षचरित' में बड़ा सुंदर चित्र खींचा है -
- हर्ष ने सर्वप्रथम अपने भाई के घातक तथा विधवा बहन राजश्री के राज्य को छीनने वाले कन्नौज नरेश देवगुप्त पर आक्रमण किया | हर्ष

की शक्तिशाली सेना के सामने शुत्र टिक न सका | हर्ष का कन्नौज पर आसानी से कब्जा हो गया |

- फिर उसने अपनी बहन राज्यश्री को ढूंढा | चूंकि ग्रहवर्मा की मृत्यु के बाद कन्नौज राज्य का कोई उत्तराधिकारी नहीं था,अत: हर्ष उस का संरक्षक बन गया |
- हमून्त्सांग के विवरण से पता चलता है कि कन्नौज पर अधिकार करने के पश्चात् हर्ष ने पंचगौड़ शशांक पर प्रबल आक्रमण किया और उसे परस्त करके अपने अधिकार में कर लिया | हर्ष की विजयवाहिनी सेनाएं आगे बढती रही | शीघ्र ही उसने उड़ीसा तथा मिथिला पर अधिकार कर लिया | चीनी यात्री के अनुसार हर्ष को इन विजयों के लिए निरंतर छ: वर्षो तक युद्ध करना पड़ा था |
- उस समय वल्लभी अथवा गुजरात का शासक ध्रुवसेन था | सन् 633 के आस-पास उसने वल्लभी पर अधिकार कर लिया | ध्रुवसेन के सद्व्यवहार से प्रभावित होकर हर्ष ने उसका राज्य केवल वापिस ही नहीं दिया,अपितु,अपनी पुत्री का विवाह भी ध्रुवसेन के साथ कर दिया,वल्लभी के साथ ही कच्छआनंदपुर और सुरत भी वल्लभ राज्य राज्य के अधीन थे | इसलिए यह राज्य भी हर्ष के साम्राज्य के सांमत राज्य बन गए |
- इसके बाद हर्ष ने दक्षिण भारत में प्रवेश किया | जंगल,पहाड़,नदियों को लांघता हुआ वह 634 ई. में दक्षिण में पहुंचा और वहां के राजा पुलकेशिन दिवतीय पर आक्रमण कर दिया | नर्मदा के किनारे घोर युद्ध हुआ हर्ष पराजित होकर घर लौटा | नि:संदेह पुलकेशिन के जीवन की यह महान घटना थी |
- हर्ष की अंतिम विजय भारत के पूर्वी तट के पास गंजाम प्रदेश की थी | गंजाम उस समय कौंगद के नाम से प्रसिद्ध था | गंजाम पर आक्रमण करने के लिए हर्ष ने उड़ीसा में अपने शिविर स्थापित किए | पहले यद्यपि उसे कुछ असफलता मिली,तथापि 643 ई. में गंजाम पर उसका अधिकार हो गया |
- अब हर्ष एक विशाल साम्राज्य का स्वामी था | उसका साम्राज्य विस्तार में हिमालय से लेकर दक्षिण में नर्मदा नदी तक,पूर्व में कामरूप से लेकर पश्चिम में पंजाब तथा अरब सागर तक फैला हुआ था | बंगाल,बिहार,मालव,वल्लभी,कन्नौज,हृयान्ना,पंजाब,सिंघ,कश्मीर,नेपाल आदि उसके राज्य के अंग थे |